नन्हा रकून
और कोई परेशानी नहीं

लिलियन मूर



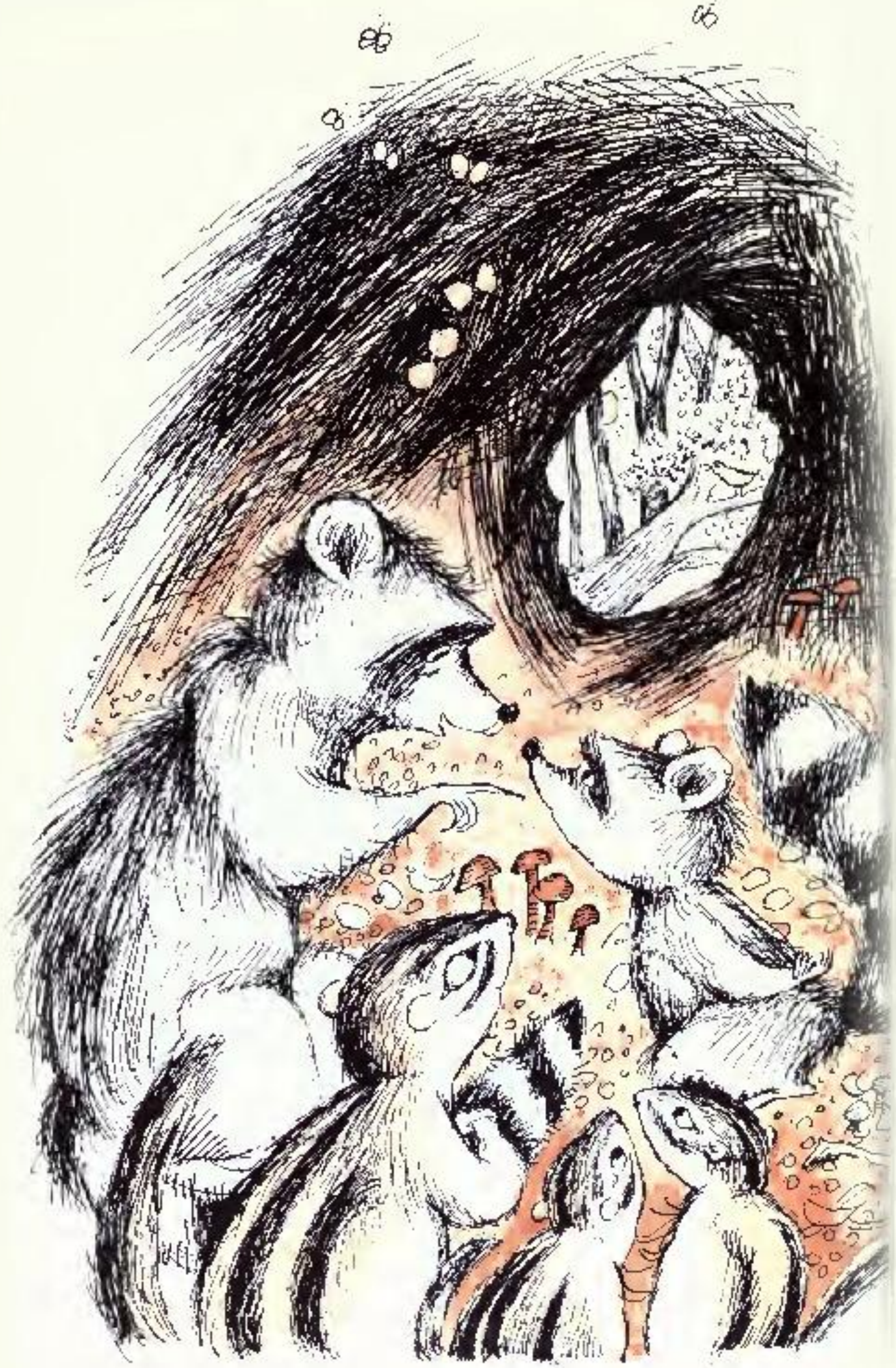
नन्हा रकून
और कोई परेशानी नहीं

लिलियन मूर









"नन्हे रकून," माँ ने कहा, "क्या मेरी सहायता करोगे?"

नन्हा रकून उछल पड़ा.

"क्या तुम चाहती हो

कि मैं बहती हुई नदी की ओर जाऊँ?"

"नहीं," माँ ने कहा.

"क्या तुम चाहती हो

कि मैं खाने के लिए क्रेफिश पकड़ कर लाऊँ?"

"नहीं," माँ ने कहा. "मैं चाहती हूँ कि तुम मेरी बात सुनो. चिपमंक माँ और मुझे कहीं जाना है. जब तक हम लौट नहीं आते तब तक क्या तुम उसके दोनों छोटे बच्चों का ध्यान रखोगे?"

"क्या ध्यान रखोगे, नन्हे रकून,"

चिपमंक माँ ने पूछा.

नन्हे रकून ने चिपमंक के बच्चों को देखा.

"मैंने ऐसा काम पहले कभी नहीं किया है,"

उसने कहा.



दो नन्हे चिपमंक, चुपचाप स्थिर बैठे हुए,

नन्हे रकून को देख रहे थे.

“देखो वह दोनों कितने भले हैं,”

चिपमंक माँ ने कहा.

“यह तुम्हें बिलकुल परेशान नहीं करेंगे.”

कितने छोटे हैं.

कितने अच्छे हैं.

कोई परेशानी नहीं होगी.

“ठीक है,” नन्हे रकून ने कहा.

“मैं इनका ध्यान रखूँगा.”

“धन्यवाद, नन्हे रकून,”

चिपमंक माँ ने कहा.

रकून की माँ ने भी उसको धन्यवाद कहा.

और वह दोनों चली गईं.





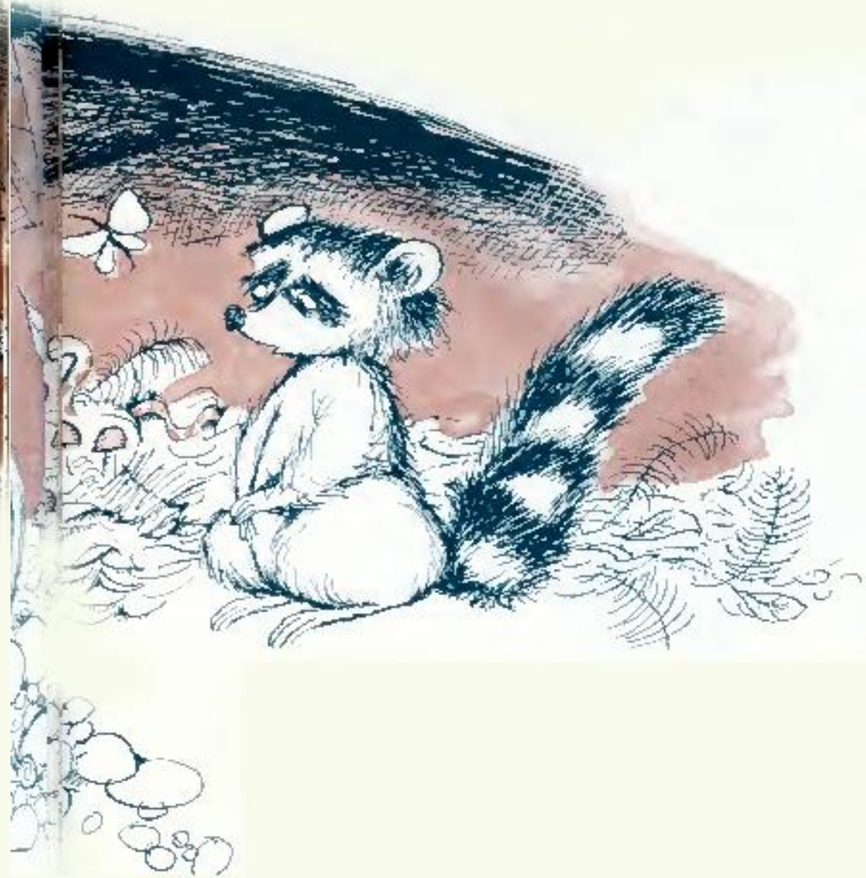
नन्हा रकून खड़े होकर

नन्हे चिपमंकों को देखने लगा.

“वह मेरा भाई है,” एक चिपमंक ने कहा.

“वह मेरी बहन है,” दूसरे चिपमंक ने कहा.

“ओह,” नन्हे रकून ने कहा.



दोनों चिपमंक नन्हे रकून को देखते रहे.

“हमारे साथ खेलो,” भाई ने कहा.

“पीछा करने का खेल खेलो,” बहन ने कहा.

“मैंने ऐसा खेल कभी नहीं खेला,”

नन्हे रकून ने कहा.

“तुम्हें बस हमारा पीछा करना है,”

भाई ने कहा.



दोनों चिपमंक एक पेड़ की ओर दौड़े.

“आओ,” वह चिल्लाए.

“हमारे पीछे आओ.”

और वह पेड़ पर चढ़ गए.

नन्हा रकून उनके पीछे भागा

और वह भी पेड़ पर चढ़ गया.



एक चिपमंक एक डाल पर भागा.

वूश!

वह दूसरे पेड़ पर कूद गया.

“हमारे पीछे आओ.” वह चिल्लाया.

दूसरी चिपमंक भी पेड़ की डाल पर भागी.

वूश!

वहाँ से कूद कर वह दूसरे पेड़ पर चढ़ गई.

“हमारे पीछे आओ.” वह चिल्लाई.



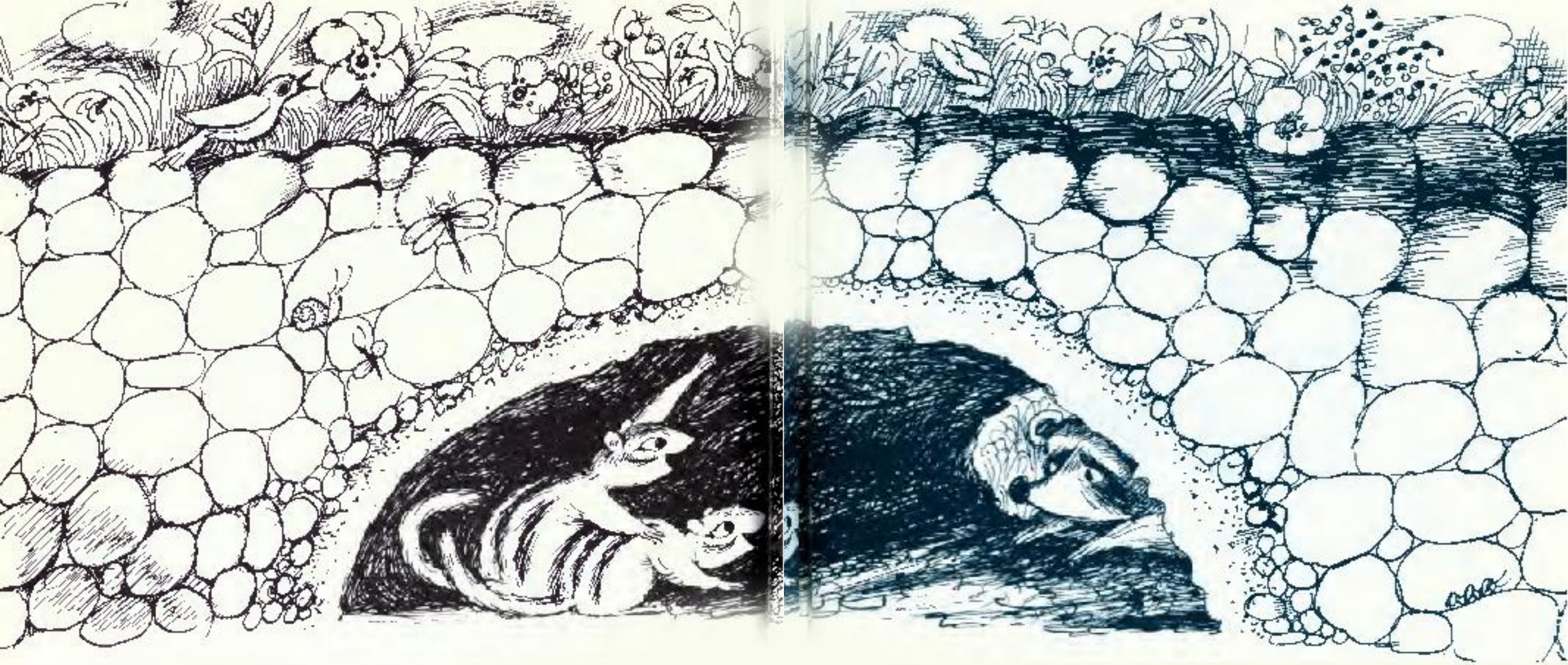
नन्हा रकून भी उसी डाल पर चढ़ गया.

लेकिन वह डाल बहुत पतली थी.

रकून भारी था.

थड़ाम!

वह नीचे आ गिरा.



"हमारे पीछे आओ!"

दोनों चिपमंक एक साथ चिल्लाए.

और वह पत्थरों की पुरानी दीवार की ओर भागे.

दीवार में एक सुराख था.

एक चिपमंक सुराख के अंदर चला गया.

दूसरे ने पुकार कर कहा,

"मेरे पीछे आओ!"

और वह भी सुराख के अंदर चला गया.

नन्हा रकून उठ खड़ा हुआ.

वह दीवार के पास आया.

"यह तो कठिन काम है,"

उसने सोचा.

"अंदर आओ, हमारे पीछे!"

चिपमंकों ने कहा.



नन्हे रकून ने अपना सिर सुराख में डाला

फिर उसने अगले पंजे भीतर किए.

लेकिन सुराख बहुत छोटा था.

“मैं अंदर नहीं आ सकता,” उसने कहा.

उसने पिछले पंजों से ज़ोर लगाया.

“मैं बाहर नहीं जा सकता!” वह चिल्लाया.



“नन्हा रकून फंस गया है!”

भाई चिपमंक ने कहा.

“तुम अजीब लग रहे हो,” बहन ने कहा.

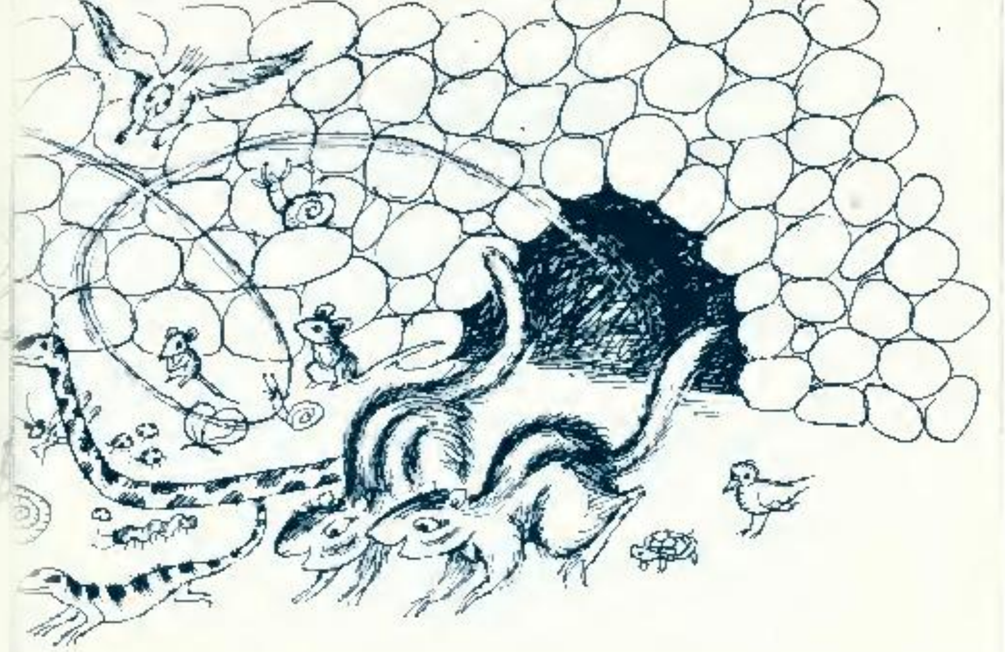
और दोनों हँसने लगे.

नन्हे रकून को लगा कि हँसने वाली कोई बात न थी.

वह टेढ़े-मेढ़े हिलने लगा. कभी इस ओर कभी उस ओर.

उसने अपने के धकेला, फिर और धकेला.





आखिरकार बहुत हिलने-डुलने ओर धकेलने के बाद

वह सुराख से बाहर निकल ही आया.

चिपमंक भी सुराख से बाहर आ गए.

"हम यहाँ हैं," वह चिल्लाए.

"अब कोई खेल नहीं खेलेंगे," नन्हे रकून ने कहा.

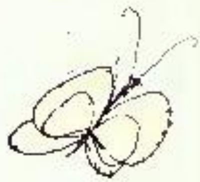
"तुम यहाँ बैठ जाओ और तुम वहाँ बैठ जाओ."

नन्हे चिपमंक, नन्हे रकून को देखते हुए,

चुपचाप बैठ गए.

“क्या तुम्हें कोई करतब आता है?”

भाई ने पूछा.



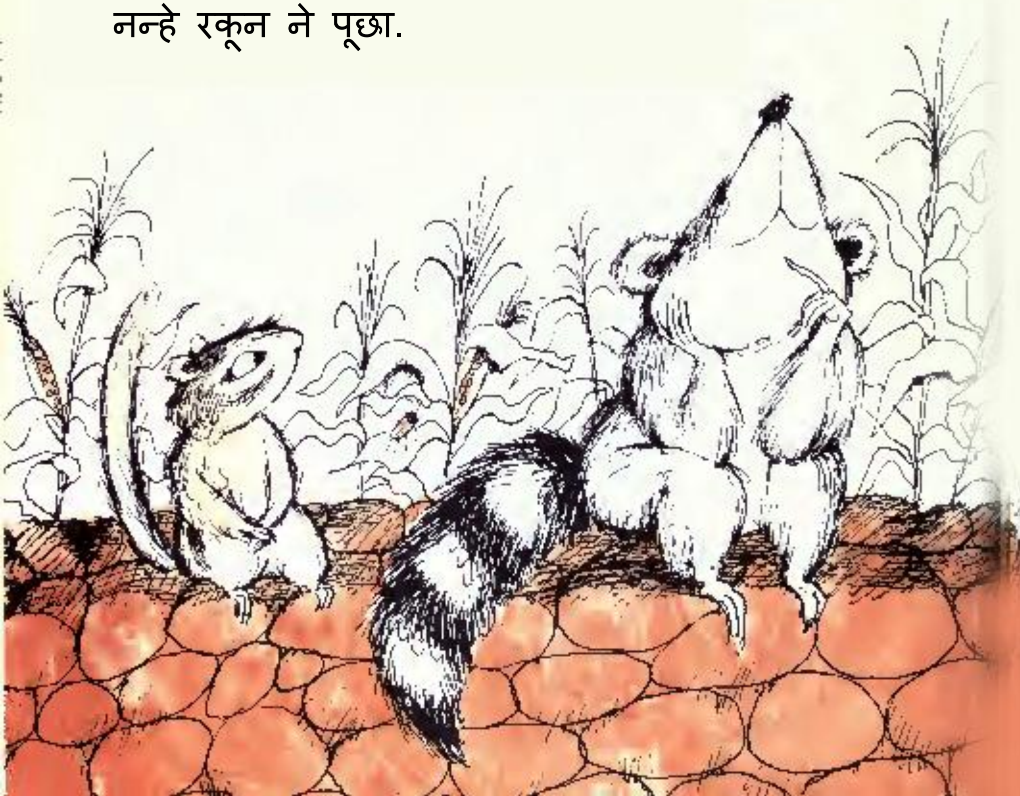
“नहीं,” नन्हे रकून ने कहा.

“हमें एक करतब आता है,” बहन ने कहा.

“हम तुम्हें अपना करतब दिखा सकते हैं?”

“क्या करतब है?”

नन्हे रकून ने पूछा.





“हम पेड़ के पीछे छिप जाएंगे

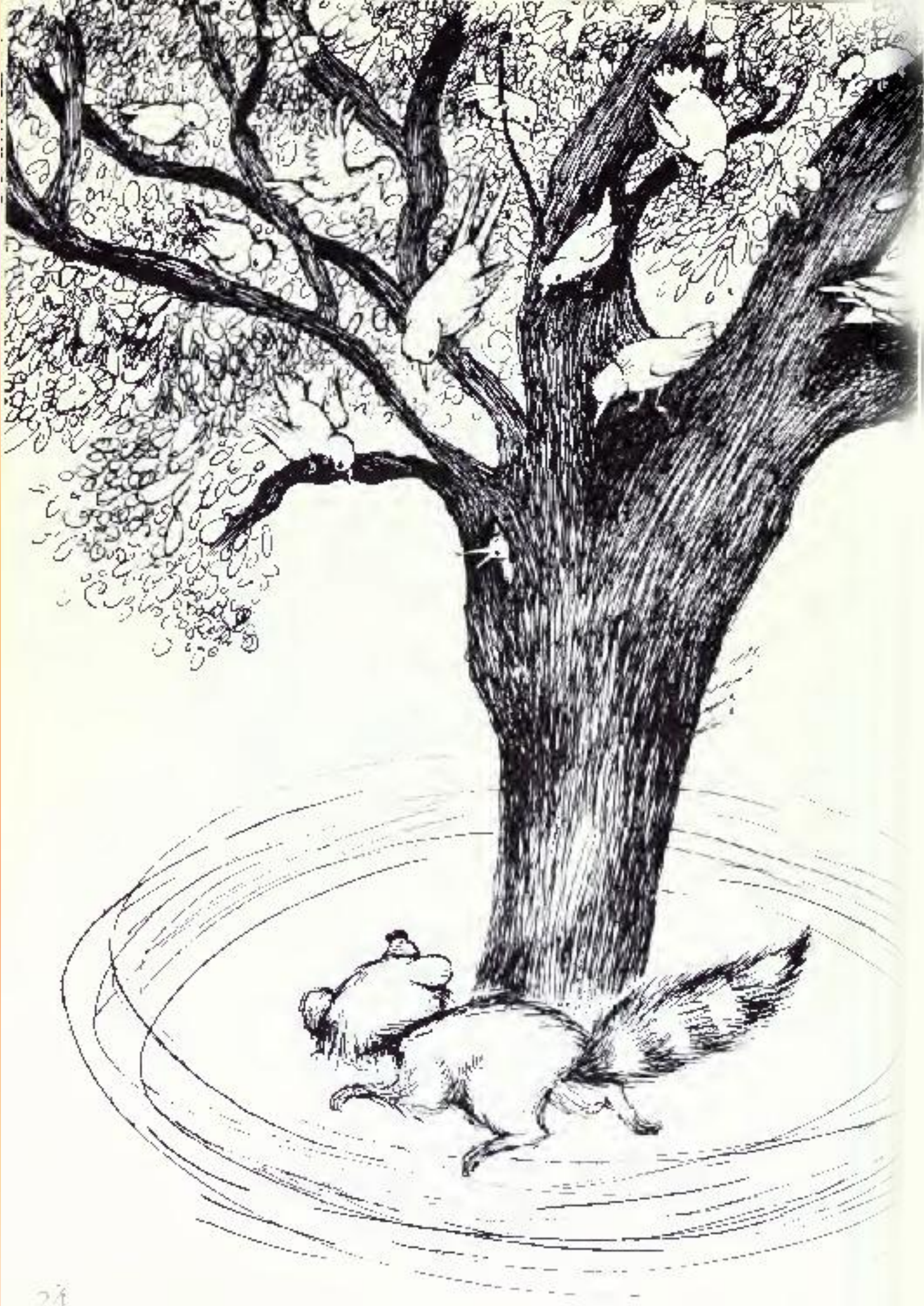
और तुम हमें कभी देख न पाओगे,”

भाई ने कहा.

“कभी नहीं देख पाओगे,” बहन ने कहा.

“कोशिश करो,” भाई ने कहा.







और दोनों चिपमंक एक पेड़ के पीछे छिप गए.

नन्हा रकून पेड़ के चारों ओर भागा

लेकिन चिपमंक उससे तेज़ भाग रहे थे.

वह उसे दिखाई न दिए.

“क्या तुम पेड़ के पीछे हो?”

उसने पूछा.

“हाँ!” दोनों चिल्लाए.

नन्हा रकून फिर से पेड़ के

चारों ओर भागा.

बार-बार भागा.

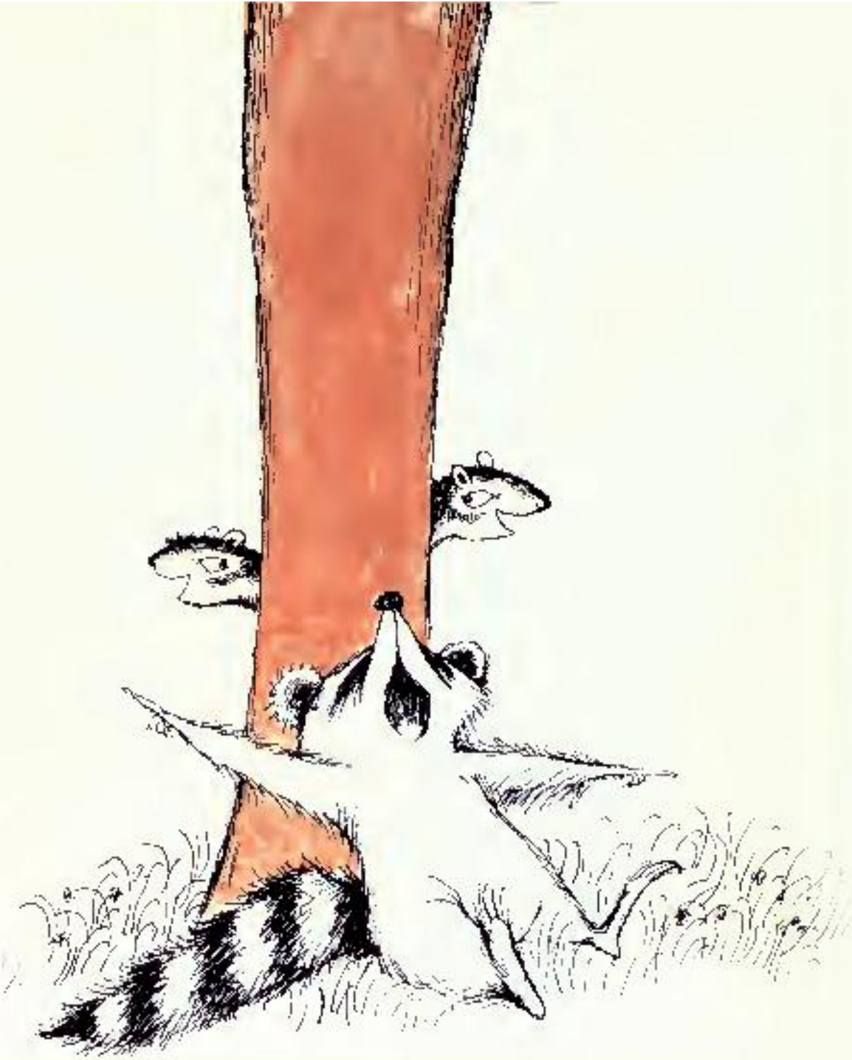
वह आश्चर्यचकित था क्योंकि

अभी भी उसे चिपमंक

दिखाई न दिए.

वह तेज़, और तेज़ भागा,

पेड़ के चारों ओर.



अचानक उसे लगा कि सब कुछ

घूम रहा था, तेज़, और तेज़.

नन्हे रकून को ऐसा चक्कर आया कि

उसे बैठना पड़ा.

“हम यहाँ हैं!” दोनों चिपमंक चिल्लाए.

“अब और कोई करतब नहीं,” नन्हे रकून ने कहा.

“तुम यहाँ बैठ जाओ और तुम वहाँ बैठ जाओ!”

नन्हे चिपमंक, नन्हे रकून को देखते हुए,

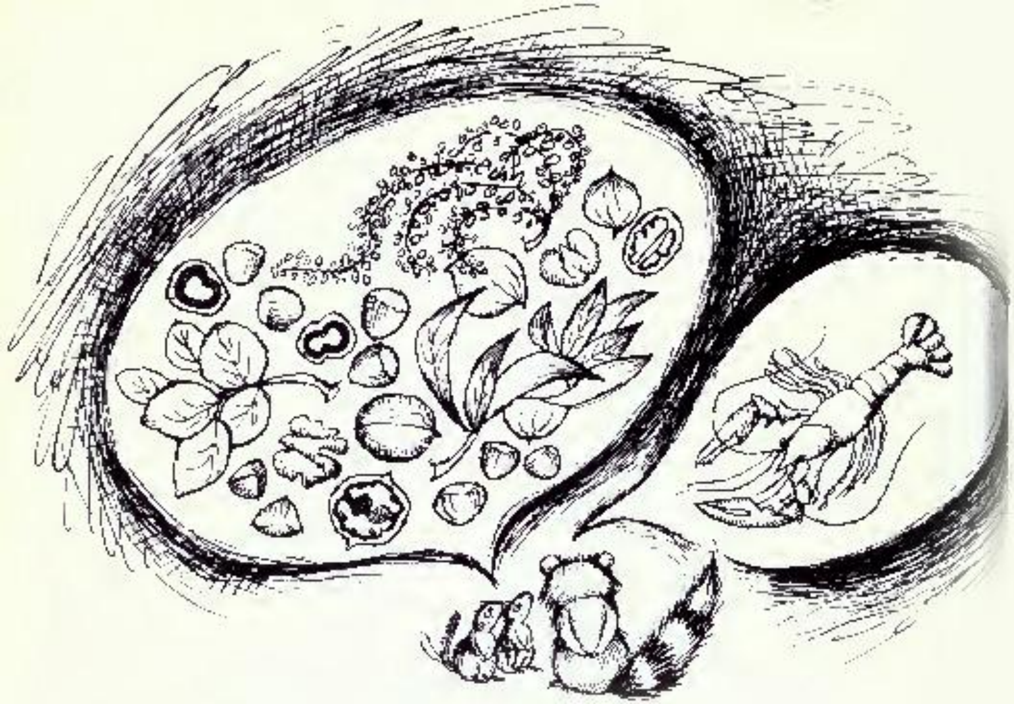
चुपचाप बैठ गए.

“मुझे भूख लगी है,” बहन ने कहा.

“मुझे भी,” भाई ने कहा.

“मुझे भी!” नन्हे रकून ने सोचा.





उसने नन्हे चिपमंकों को देखा.

“क्या तुम्हें क्रेफिश अच्छी लगती है?”

“हमें अखरोट और बीच-नट्स अच्छे लगते हैं,”

भाई ने कहा.

“और हेज़ल-नट्स और हिक्री-नट्स,”

बहन ने कहा. “क्रेफिश क्या होती है?”

“सबसे अच्छी मछली,” नन्हे रकून ने कहा.

“चलो नदी के पास चल कर मछली पकड़ते हैं.”

नन्हे चिपमंक उछल पड़े.

“मेरे पीछे रहना,”

नन्हे रकून ने कहा.

और वह नदी की ओर चल पड़े.



रास्ते में नन्हा रकून

क्रेफिश के बारे में सोचने लगा.

अहा! क्रेफिश!

वह गाने लगा:

“अहा! क्रेफिश! क्रेफिश!

हर दिन खाऊं मैं ऐसी फिश.”

और वह बार-बार यही लाइन गाने लगा.



शीघ्र ही उसे एक पेड़ के नीचे

आराम से बैठी साही दिखाई दी.





“हैलो, नन्हे रकून,” साही ने कहा.

“तुम अकेले कहाँ जा रहे हो?”

“अकेले?” नन्हे रकून ने कहा.

और उसने पीछे मुड़ कर देखा. “अरे, नहीं!”

“क्या हुआ?” साही ने पूछा.

“दोनों चिपमंक खो गए,” नन्हे रकून ने कहा.

तभी नन्हे रकून के सिर पर

कोई चीज़ गिरी.

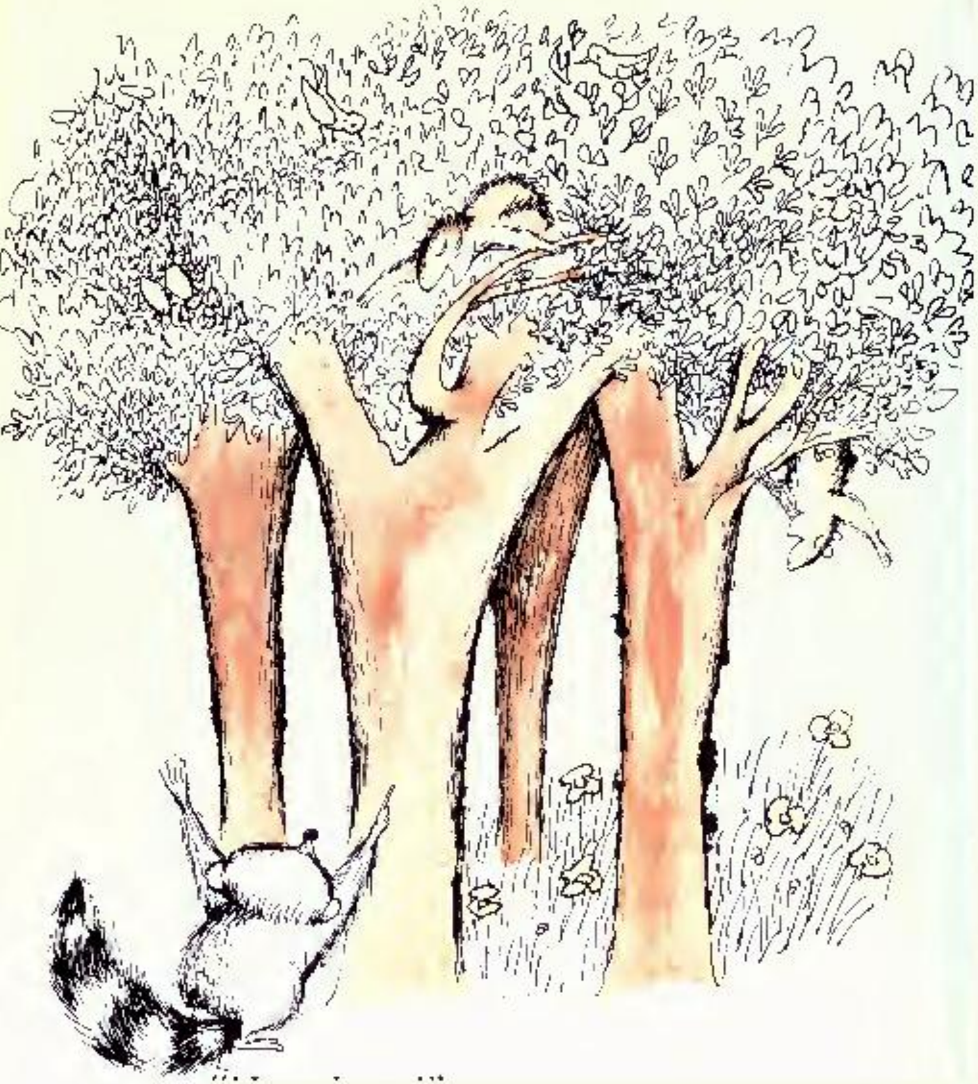
“मैं यहाँ हूँ!” भाई चिपमंक ने

पेड़ के ऊपर से कहा.

नन्हे रकून के सिर पर

फिर एक चीज़ गिरी.





"मैं यहाँ हूँ!"

बहन चिपमंक ने कहा.

"नीचे आओ!" नन्हे रकून ने कहा.

"अभी नीचे आओ!"

दोनों चिपमंक भागते हुए

पेड़ से नीचे आ गए

"हम यहाँ हैं," दोनों एक साथ चिल्लाए.

नन्हे रकून ने उन्हें घूर कर देखा.

"मुझे कुछ करना होगा,"

उसने सोचा.

"मुझे कुछ ऐसा करना होगा कि

यह अच्छा व्यवहार करें."

लेकिन उसने सिर्फ इतना कहा,

"मेरे पीछे आओ."

और वह उसके पीछे-पीछे चलते

नदी के पास आ गए.

नदी के ऊपरी छोर की तरफ
ऊदबिलाव का तालाब था.
तालाब के बीच में
ऊदबिलाव अपना घर बनाने में व्यस्त था.
नन्हे रकून ने ऊदबिलाव की ओर देखा,
“मुझे कुछ करना होगा,” उसने सोचा.
“और मैं जानता हूँ कि मुझे क्या करना है.”

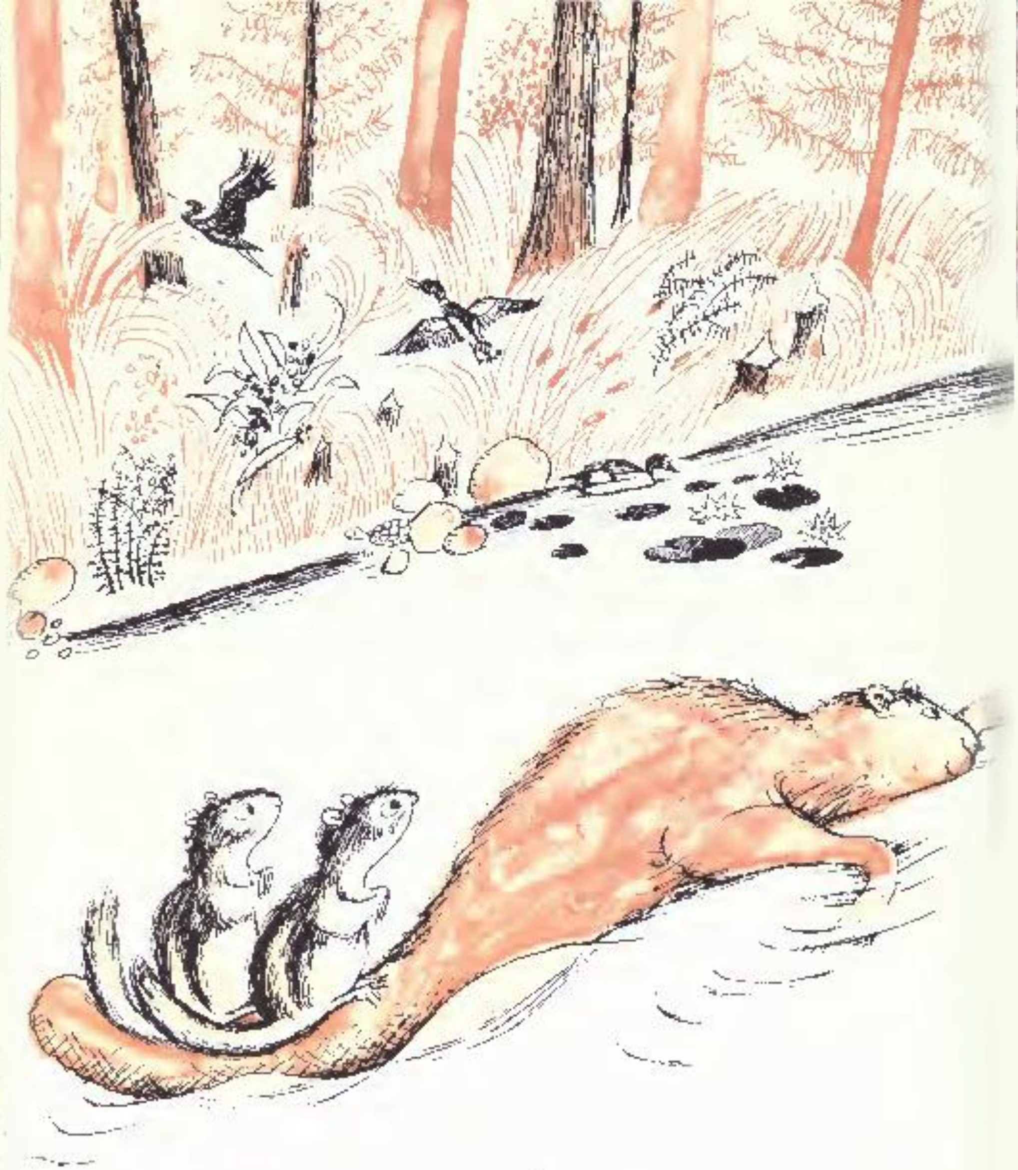


नन्हा रकून मछलियाँ पकड़ने लगा.
चिपमंक बैठ कर उसे देखने लगे.
उन्होंने उसे एक बढ़िया,
मोटी मछली पकड़ते देखा.



उन्होंने उसे पानी में कूद कर
ऊदबिलाव के घर की ओर तैर कर जाते देखा.
नन्हा रकून वहाँ बैठ गया
और क्रेफिश खाने लगा.
“ओह,” उसने पुकार कर चिपमंकों को कहा.
“यह क्रेफिश बहुत अच्छी है!”
“हमें भी मछली चाहिए!” चिपमंकों ने कहा.
“हमें भी मछली चाहिए!”







“ऊदबिलाव,” नन्हे रकून ने कहा.

“चिपमंक यहाँ आना चाहते हैं

क्या तुम इन्हें अपनी पीठ पर बैठा कर

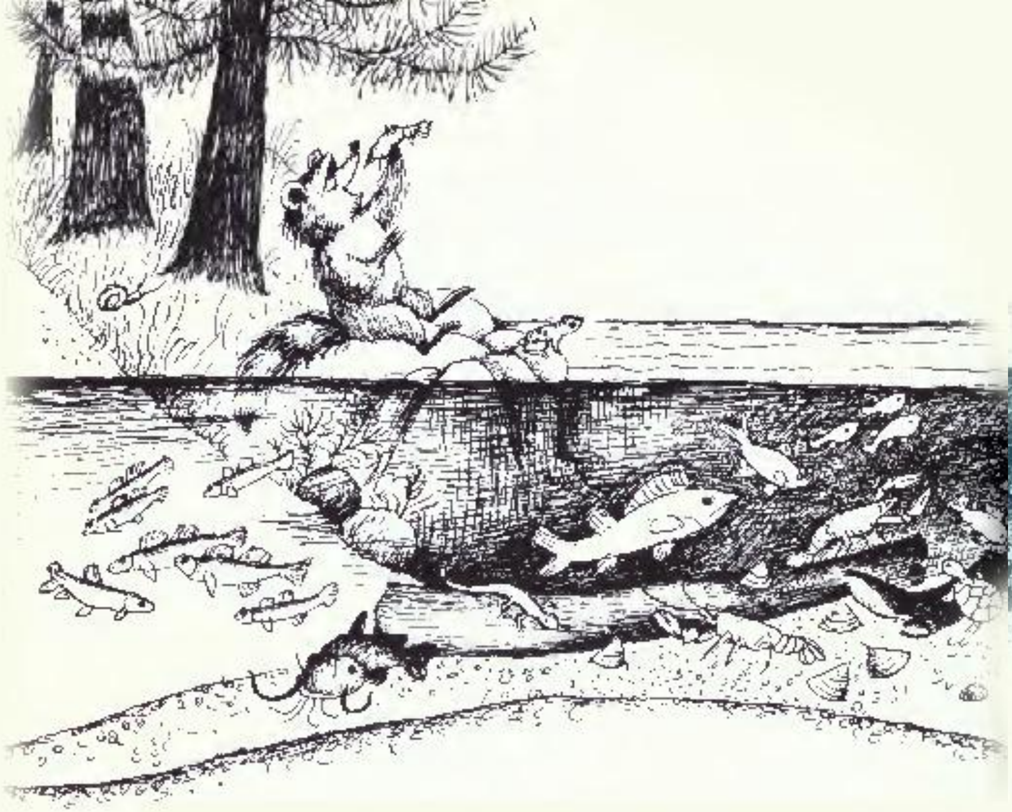
यहाँ ले आओगे?”

“कूद कर आ जाओ!”

ऊदबिलाव ने दोनों से कहा.

और दोनों को अपनी पीठ पर बिठा कर

ऊदबिलाव उन्हें नन्हे रकून के पास ले आया.





“तुम यहाँ बैठ जाओ,” नन्हे रकून ने कहा.

“और तुम वहाँ बैठ जाओ.”

और उसने उन्हें थोड़ी सी क्रेफिश दी.

फिर नन्हा रकून पानी में कूद गया और

तैर कर तालाब के दूसरे किनारे पर आ गया.

वह फिर से मछली पकड़ने लगा और शीघ्र ही

उसने एक बढ़िया, मोटी क्रेफिश पकड़ ली.

नन्हे चिपमंकों ने

तालाब के पार

नन्हे रकून को देखा.

“हमें क्रेफिश पसंद नहीं है,” भाई ने कहा.

“हम क्रेफिश से घृणा है,” बहन ने कहा.

नन्हा रकून मछली खाता रहा.





“हमें यहाँ अच्छा नहीं लग रहा,” भाई ने कहा.

“हमें बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा.”

नन्हा रकून खाता रहा.

“हम घर जाना चाहते हैं!” भाई ने कहा.

“नन्हे रकून,” बहन ने रोते हुए कहा,

“हम घर जाना चाहते हैं.”





नन्हे रकून ने

तालाब के दूसरे किनारे से

चिपमंकों को देखा.

“कोई खेल नहीं खेलना?” उसने कहा.

“नहीं,” दोनों चिपमंकों ने कहा.

“कोई करतब नहीं दिखाना?”

“नहीं,” दोनों चिपमंकों ने कहा.

“पेड़ों पर चढ कर कोई मस्ती नहीं करनी?”

“ओह, नहीं,” दोनों चिपमंकों ने कहा.



“ऊदबिलाव,” नन्हे रकून ने कहा.

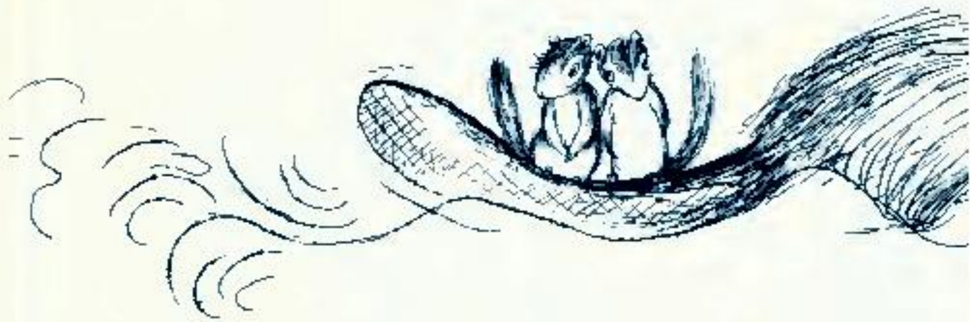
“चिपमंक वापस आना चाहते हैं.”

“कूद कर मेरी पीठ पर सवार हो जाओ.”

ऊदबिलाव ने कहा.

और वह उन्हें वापस

तालाब के दूसरे किनारे पर ले आया.



“मेरे पीछे-पीछे आओ,” नन्हे रकून ने कहा.

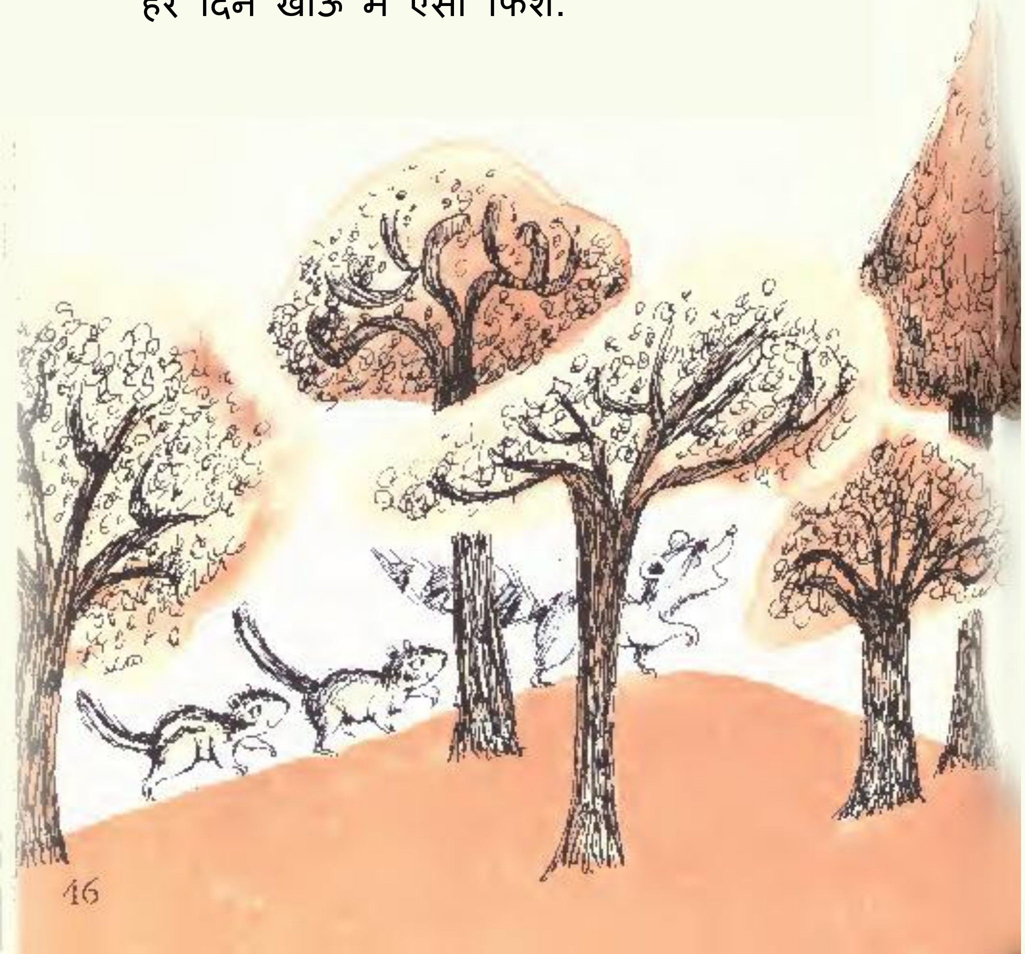
“जब तक हम घर नहीं पहुँच जाते.”

चिपमंकों ने वैसा ही किया.

और सारे रास्ते नन्हा रकून गाता रहा:

“अहा! क्रेफिश! क्रेफिश!

हर दिन खाऊं मैं ऐसी फिश.”



जिस समय रकून माँ और चिपमंक माँ

घर पहुँचे उसी समय वह भी पहुँच गए.

“हैलो, नन्हे बच्चो,”

चिपमंक माँ ने कहा.

“क्या तुम ने अच्छा व्यवहार किया?”

क्या इन्होंने अच्छा व्यवहार किया?”



नन्हे चिपमंक नन्हे रकून

को देखने लगे.

नन्हे रकून ने

नन्हे चिपमंकों को देखा.

“कोई परेशानी नहीं हुई,”

नन्हे रकून ने कहा.

